ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in September 2025

सह–शिक्षा एवं कन्या महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक विकास के साथ 'संस्कारों' के अर्जन का एक तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

विमला, शोधार्थी, शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. सुमन रानी, शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह जाँचना है कि उच्च शिक्षा के विभिन्न परिवेश (सह–शिक्षा और कन्या महाविद्यालय) छात्राओं के चारित्रिक और सांस्कृतिक निर्माण (संस्कारों) में किस प्रकार भूमिका निभाते हैं। शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों और संस्कारों का आत्मसातीकरण है। इस अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि क्या केवल छात्राओं वाले वातावरण में संस्कारों का पोषण अधिक प्रभावी होता है या सह–शिक्षा के वातावरण में सामाजिक व्यवहार और संस्कारों का संतुलन बेहतर बैठता है। सर्वेक्षण विधि और साक्षात्कारों के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि संस्थागत वातावरण संस्कारों के स्वरूप को प्रभावित करता है।

परिचय

भारतीय संस्कृति में शिक्षा का मूल उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए) माना गया है। आधुनिक संदर्भ में शिक्षा के साथ श्संस्कारश शब्द का अर्थ नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव है।

उच्च शिक्षा के दौरान छात्राएं अपने व्यक्तित्व के निर्माण की अंतिम अवस्था में होती हैं। सह–शिक्षा (Co&education) महाविद्यालयों में उन्हें प्रतिस्पर्धी और यथार्थवादी सामाजिक वातावरण मिलता है, वहीं कन्या महाविद्यालयों (Women's Colleges) में उन्हें अपनी परंपराओं और नेतृत्व क्षमताओं को विकसित करने का एक सुरक्षित और विशिष्ट मंच मिलता है। यह शोध इस धारणा का परीक्षण करता है कि शिक्षा के साथ संस्कारों का समावेश किस प्रकार इन दोनों व्यवस्थाओं में भिन्न–भिन्न होता है।

साहित्य समीक्षा

अग्रवाल (2016): के अनुसार, मूल्य–परक शिक्षा (Value&based Education) संस्थानों के भौतिक वातावरण से अधिक वहां की कार्यप्रणाली पर निर्भर करती है।

पारेख (2019): ने अपने अध्ययन में पाया कि कन्या महाविद्यालयों में भारतीय संस्कृति और पारंपरिक संस्कारों के प्रति झुकाव अधिक देखा जाता है, क्योंकि वहां सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अधिक स्वायत्तता होती है।

मल्होत्रा एवं अन्य (2021): का तर्क है कि सह–शिक्षा संस्थानों में छात्राओं में 'सामाजिक संस्कार' जैसेकृ सहयोग, विपरीत लिंग के प्रति सम्मान और आत्मविश्वास–अधिक विकसित होते हैं।

UNESCO की रिपोर्ट (2020): शिक्षा और चरित्र निर्माण के वैश्विक मानकों पर जोर देती है, जो यह स्पष्ट करती है कि शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों का जुड़ाव अनिवार्य है।

शोध समस्या

''सह–शिक्षा महाविद्यालयों की तुलना में कन्या महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में 'संस्कार' और 'नैतिक मूल्यों' का समावेश अधिक प्रभावी ढंग से होता है, अथवा यह केवल एक सामाजिक मिथक है।''

शोध के उद्देश्य

छात्राओं में शिक्षा के साथ आने वाले विभिन्न संस्कारों (अनुशासन, नैतिकता, सामाजिक बोध) की पहचान करना।

सह–शिक्षा महाविद्यालयों की छात्राओं के संस्कार–स्तर का मूल्यांकन करना।

कन्या महाविद्यालयों की छात्राओं के संस्कार–स्तर का मूल्यांकन करना।

दोनों समूहों की छात्राओं के बीच शैक्षिक उपलब्धि और संस्कारों के मध्य संबंध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

H01: सह–शिक्षा और कन्या महाविद्यालयों की छात्राओं के संस्कारों और नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। (शून्य परिकल्पना)

H1: कन्या महाविद्यालयों की छात्राओं में पारंपरिक एवं सांस्कृतिक संस्कारों का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होता है।

H2: सह–शिक्षा की छात्राओं में व्यावहारिक और सामाजिक अनुकूलन के संस्कार अधिक पाए जाते हैं।

विधि तंत्र

शोध की सटीकता के लिए निम्नलिखित वैज्ञानिक ढांचा अपनाया गया है:

शोध प्रारूप: तुलनात्मक विवरणात्मक विधि।

न्यादर्श (Sample): 400 छात्राएं (200 सह–शिक्षा से और 200 कन्या महाविद्यालयों से)।

उपकरण:

1. 'मूल्य एवं संस्कार अनुसूची' (Value and Sanskar Inventory) – स्व–निर्मित प्रश्नावली।
2. साक्षात्कार (In&depth Interviews) – कुछ चुनिंदा छात्राओं और प्राध्यापकों के साथ।

सांख्यिकीय विश्लेषण: आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, मध्यमान और 'ज–जमेज' का प्रयोग किया गया है।

संस्कारों का वर्गीकरण

शोध में संस्कारों को तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

व्यक्तिगत संस्कार: सत्यनिष्ठा, अनुशासन, समयबद्धता और स्वावलंबन।

सामाजिक संस्कार: बड़ों का सम्मान, सहिष्णुता, टीम वर्क और सहानुभूति।

सांस्कृतिक संस्कार: अपनी परंपराओं, वेशभूषा, भाषा और पर्वों के प्रति गौरव।

महत्व

समाज के लिए: यह अध्ययन स्पष्ट करेगा कि भविष्य की माताओं और नागरिकों के निर्माण में कॉलेजों की क्या भूमिका है।

कॉलेज प्रबंधन हेतु: यह शोध उन्हें पाठ्यक्रम के साथ श्वैल्यू एजुकेशन' (Value Education) जोड़ने के लिए प्रेरित करेगा।

छात्राओं हेतु: उन्हें यह समझने में मदद मिलेगी कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि एक श्रेष्ठ मनुष्य बनना है।

निष्कर्ष

शोध के निष्कर्षों के आधार पर यह पाया गया किरू

कन्या महाविद्यालय: यहाँ की छात्राओं में पारंपरिक संस्कारों और अनुशासन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता देखी गई। यहाँ का शांत वातावरण आत्म–चिंतन में सहायक है।

सह–शिक्षा महाविद्यालय: यहाँ की छात्राएं अधिक व्यावहारिक हैं। उनमें आत्मविश्वास और आधुनिक सामाजिक परिवेश में सामंजस्य बिठाने के संस्कार (जैसे लैंगिक समानता का सम्मान) अधिक प्रबल हैं।

एकीकृत परिणाम: शिक्षा के साथ संस्कारों का आना केवल कॉलेज के प्रकार पर नहीं, बल्कि कॉलेज की 'संस्थागत संस्कृति' (Institutional Culture) और प्राध्यापकों के आचरण पर अधिक निर्भर करता है। निष्कर्ष यह है कि दोनों ही वातावरण अपने–अपने तरीके से संस्कारों के विकास में योगदान देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सक्सेना, एन. आर. (2017). शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत, लाल बुक डिपो, मेरठ।

पाण्डेय, आर. एस. (2015). मूल्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

Kohlberg, L. (1981). Essays on Moral Development: The Philosophy of Moral Development. Harper & Row.

जोशी, जे. सी. (2020). भारतीय शिक्षा व्यवस्था और संस्कार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

Sharma, R. K. (2022). Co&education vs Gender&segregated Education: A Behavioral Study. Indian Educational Review.